Dr. Madan Paswan, History.

Class: B.A. Part-I (Sub.+Hons.) Paper-1st

August Lecture No. 3
Date: 05/08/2020

Topic: Unit-II (ii) Jainism

From Page no. 1-2.

(Continue...)

बाद के समय में, जैन धर्म दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गया, श्वेताम्बर जो सफेद वस्त्र पहनते थे और दिगम्बर जो नग्न रहते थे। जैन धर्म के तीन गहने या त्रिरत्न — ① सही ज्ञान ② सही विश्वास और ③ सही अमल, माने जाते हैं।

जैन धर्म के तीर्थंकर :—	
1. ऋषभदेव	13. विमलनाथ
2. अजितनाथ	14. अनन्तनाथ
3. सम्भवनाथ	15. धर्मनाथ
4. अभिनन्दन	16. शांतिनाथ
5. सुमितनाथ	17. कुंथुनाथ
6. पद्मप्रभु	18. अरनाथ
7. सुपार्श्वनाथ	19. मल्लिनाथ
8. चन्द्रप्रभा	20. मुनिसुव्रतनाथ
9. सुविधि	21. नेमिनाथ
10. शीतलनाथ	22. अरिष्टनेमि
11. श्रेयांसनाथ	23. पार्श्वनाथ
12. वासुपूजा	24. महावीर

गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाले जैनियों के लिए भी इन्हीं पाँच महाव्रतों की व्यवस्था — 1. अहिंसा ② सत्य वचन ③ अस्तेय ④ ब्रह्मचर्य ⑤ अपरिग्रह, है, किन्तु इनकी कठोरता में पर्याप्त कमी की गई और इसलिए इन्हें 'अणुव्रत' कहा गया है। जैन धर्म में तीन गुणव्रतों का पालन करना भी अनिवार्य है, जो निम्नलिखित हैं :—

① दिग्व्रत,
② अनर्थदण्ड व्रत तथा
③ देशव्रत।

जैन धर्म में चार शिक्षाव्रतों का भी उल्लेख है, जो निम्नलिखित हैं :—

① सामयिक, ③ अतिथि सम्विभाग एवं
② प्रोषधोपवास, ④ भोगोपभोग परिणामव्रत।

जैन धर्म में 18 वैसे कार्यों का उल्लेख किया गया है जो मनुष्य के कर्मबंधन में बाधा डालते हैं। जैन धर्म में उन्हें पाप समझा गया है। ये हैं—

1. प्राणातिपात (हिंसा)	6. क्रोध	11. द्वेष	16. माया (कपट)
2. झूठ	7. मान	12. कलह	17. मिथ्यादर्शन
3. चोरी	8. माया	13. चुगली	18. असुख।
4. मैथुन	9. लोभ	14. दोषारोपण	
5. द्रव्यमूर्च्छा (परिग्रह)	10. राग	15. परपरिवाद	

जैन सभायें :-

⊙ **प्रथम जैन सभा :** यह सभा चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में 322-298 ई० पू० में पाटलिपुत्र में हुई थी। इसमें जैन धर्म के प्रधान भाग 12 अंगों का सम्पादन हुआ। यह सभा भद्रबाहु और सम्भूति विजय नामक स्थविरों के निरीक्षण में हुई थी।

⊙ **द्वितीय जैन सभा :** यह सभा छठी शताब्दी (512 ई०) में देवर्धि क्षमाश्रवण के नेतृत्व में गुजरात के वल्लभी नामक स्थान पर हुई। इसमें धर्म ग्रंथों का अन्तिम संकलन किया गया और इन्हें लिपिबद्ध किया गया है।

जैन धर्म का योगदान :- जैन धर्म, बौद्ध धर्म या ब्राह्मण धर्म की तरह भारतीय संस्कृति और इतिहास पर अपना प्रभाव नहीं डाल सका, फिर भी इसका कम महत्व नहीं है। जैन धर्म ने पहली बार संगठित और सशक्त रूप से ब्राह्मण धर्म को चुनौती दी, जाति प्रथा का विरोध किया, स्त्रियों को धार्मिक स्वतंत्रता दी तथा अहिंसा की नीति अपनाकर नई आर्थिक व्यवस्था और समाज के नवोदित आर्थिक वर्ग (व्यापारियों) को प्रश्रय प्रदान किया। दर्शन के क्षेत्र में जैन धर्म ने 'स्याद्वाद (अनेकांतवाद)' का प्रतिपादन किया, जो प्राचीन भारतीय दार्शनिक व्यवस्था की एक अमूल्य निधि मानी जा सकती है। साहित्य और कला के क्षेत्र में भी इस धर्म की बहुमूल्य देन है। जैनियों ने लोक भाषाओं में ग्रंथों की रचना कर इन भाषाओं के विकास में योगदान किया। प्राकृत और अर्द्धमागधी तथा अपभ्रंश भाषा का विकास उनकी महत्वपूर्ण साहित्यिक देन मानी जा सकती है। जैन विद्वानों ने व्याकरण, काव्य, नाटक, पुराण, कोश, नीति एवं दर्शन से संबद्ध अनेक ग्रंथों की रचना कर भारतीय साहित्य के विकास को प्रभावित किया। स्थापत्य और मूर्तिकला के विकास को इसने प्रभावित किया।

जैन धर्म में कर्म के आठ भेद हैं :-

1. मोहनीय,	5. वेदनीय,
2. नामकर्म,	6. ज्ञानवरणीय,
3. गोत्रकर्म,	7. अन्तरायकर्म एवं
4. आयुकर्म,	8. दर्शनावरणीय कर्म।

जैन तीर्थंकरों की भव्य मूर्तियाँ भी बनाई गईं। जैन मंदिरों का भी निर्माण हुआ।

Dr. Madan Paswan, History